सागर परियोजनाः हिंद महासागर में चीन से शक्ति संतुलन का प्रयास

राजश्री स्वामी

शोधार्थी

राजकीय महाविद्यालय श्रीडूंगरगढ़

हंसा चौधरी

शोध निदेशिका

राजनीतिक विज्ञान विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

Email - rajshreeswamirao@gmail-com

Mobile – 8619632126

सार

हिंद महासागर क्षेत्र वर्तमान वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और सामरिक संतुलन का अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। यह क्षेत्र न केवल समुद्री व्यापार के प्रमुख मार्गों का वाहक है, बल्कि ऊर्जा संसाधनों, खनिज संपदा और सामरिक नियंत्रण की दृष्टि से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। इसी कारण अनेक शक्तिशाली राष्ट्र इस क्षेत्र में अपने प्रभाव को बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं। विशेष रूप से चीन द्वारा हिंद महासागर क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को निरंतर बढ़ाया जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय शक्ति संतुलन पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। भारत ने इस बदलते सामरिक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए समुद्री सुरक्षा, सहयोग और संतुलन स्थापित करने के उद्देश्य से "सागर परियोजना" की अवधारणा प्रस्तुत की। सागर परियोजना का मूल उद्देश्य हिंद महासागर क्षेत्र में सामूहिक सुरक्षा, आर्थिक सहयोग, मानवीय सहायता और आपदा प्रबंधन के माध्यम से क्षेत्रीय स्थिरता को सुदृढ़ करना है। यह नीति भारत की समुद्री कूटनीति का महत्वपूर्ण अंग है, जिसके माध्यम से भारत अपने पड़ोसी द्वीपीय देशों तथा तटीय राष्ट्रों के साथ सहयोगात्मक संबंधों को मजबूत करने का प्रयास करता है। इस नीति के माध्यम से भारत यह संदेश देता है

कि हिंद महासागर क्षेत्र में विकास, सुरक्षा और समृद्धि सभी देशों की साझी जिम्मेदारी है। चीन द्वारा बंदरगाह निर्माण, समुद्री अवसंरचना और समुद्री मार्गों पर बढ़ती गतिविधियों ने भारत की सामरिक चिंताओं को बढ़ाया है। ऐसी स्थिति में सागर परियोजना भारत की एक संतुलनकारी रणनीति के रूप में सामने आती है, जिसका उद्देश्य चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करना और क्षेत्रीय देशों के साथ सहयोग के माध्यम से स्थिरता बनाए रखना है। यह नीति केवल सैन्य संतुलन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें आर्थिक, मानवीय और सांस्कृतिक सहयोग को भी समान महत्व दिया गया है।

इस शोध–पत्र में सागर परियोजना की पृष्ठभूमि, उद्देश्य, सामरिक महत्व और हिंद महासागर क्षेत्र में चीन के प्रभाव के संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है। साथ ही यह भी अध्ययन किया गया है कि किस प्रकार यह नीति क्षेत्रीय शक्ति संतुलन को बनाए रखने में सहायक सिद्ध हो सकती है।

भूमिका

हिंद महासागर विश्व का तीसरा सबसे बड़ा महासागर है और वैश्विक समुद्री व्यापार का एक बड़ा भाग इसी क्षेत्र से होकर गुजरता है। ऊर्जा संसाधनों की आपूर्ति, अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा तथा सामरिक प्रभुत्व की दृष्टि से यह क्षेत्र अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। बीते कुछ दशकों में इस क्षेत्र की सामरिक महत्ता और अधिक बढ़ गई है, क्योंकि अनेक वैश्विक शक्तियाँ यहाँ अपनी उपस्थिति मजबूत करने का प्रयास कर रही हैं। भारत के लिए हिंद महासागर केवल एक समुद्री क्षेत्र नहीं बल्कि उसकी सामरिक सुरक्षा, आर्थिक विकास और अंतरराष्ट्रीय संबंधों का महत्वपूर्ण आधार है। भारत की लगभग नौ हजार किलोमीटर लंबी समुद्री सीमा और अनेक द्वीपीय क्षेत्र इस महासागर से जुड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त भारत का अधिकांश विदेशी व्यापार समुद्री मार्गों के माध्यम से ही संचालित होता है। इसलिए इस क्षेत्र की स्थिरता और सुरक्षा भारत के राष्ट्रीय हितों से सीधे जुड़ी हुई है (पंत, २०१६)।

चीन द्वारा हिंद महासागर क्षेत्र में अपने प्रभाव का विस्तार पिछले कुछ वर्षों में तेजी से हुआ है। चीन ने विभिन्न तटीय देशों में बंदरगाहों का निर्माण, समुद्री अवसंरचना का विकास

तथा आर्थिक निवेश के माध्यम से अपनी उपस्थिति को मजबूत किया है। इस प्रक्रिया को कई विश्लेषकों ने "मोतियों की माला" की रणनीति के रूप में भी देखा है, जिसके अंतर्गत चीन विभिन्न समुद्री बिंदुओं पर अपनी सामरिक उपस्थिति स्थापित कर रहा है (कपलान, २०१०)।

इस बदलते परिदृश्य के बीच भारत ने क्षेत्रीय सहयोग और समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सागर परियोजना की अवधारणा प्रस्तुत की। इस नीति का मूल उद्देश्य हिंद महासागर क्षेत्र में सभी देशों के लिए सुरक्षा और विकास सुनिश्चित करना है। इसके माध्यम से भारत न केवल अपनी सामरिक स्थिति को मजबूत करना चाहता है, बल्कि क्षेत्रीय देशों के साथ विश्वास और सहयोग को भी बढ़ावा देना चाहता है। इस शोध–पत्र में यह विश्लेषण किया गया है कि सागर परियोजना किस प्रकार हिंद महासागर क्षेत्र में शक्ति संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती है और चीन के बढ़ते प्रभाव के संदर्भ में इसकी क्या भूमिका है।

सागर परियोजना की अवधारणा और विकास

हिंद महासागर क्षेत्र वैश्विक सामरिक और आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह क्षेत्र न केवल अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक मार्गों का प्रमुख केंद्र है, बल्कि ऊर्जा संसाधनों की आपूर्ति, समुद्री संचार मार्गों की सुरक्षा तथा क्षेत्रीय स्थिरता के लिए भी अत्यंत आवश्यक है। भारत की भौगोलिक स्थिति हिंद महासागर के मध्य भाग में होने के कारण इस क्षेत्र से उसका ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंध अत्यंत गहरा रहा है। इसी पृष्ठभूमि में भारत ने अपनी समुद्री नीति को अधिक सक्रिय और व्यापक बनाने के उद्देश्य से "सागर परियोजना" की अवधारणा प्रस्तुत की। सागर का अर्थ "क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास" है, जो इस नीति की मूल भावना को व्यक्त करता है। इस पहल का उद्देश्य हिंद महासागर क्षेत्र में सहयोग, स्थिरता और संतुलन स्थापित करना है, ताकि सभी तटीय और द्वीपीय देशों को समान रूप से सुरक्षा और विकास के अवसर प्राप्त हो सकें (पंत, २०१६)।

सागर परियोजना की अवधारणा का विकास भारत की व्यापक समुद्री दृष्टि का परिणाम है। भारत ने यह महसूस किया कि हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ती सामरिक प्रतिस्पर्धा और वैश्विक शक्तियों की सक्रियता के कारण क्षेत्रीय स्थिरता को बनाए रखना अत्यंत आवश्यक हो गया है। इस संदर्भ में भारत ने अपने पड़ोसी देशों तथा क्षेत्रीय साझेदारों के साथ सहयोग को बढ़ाने की नीति अपनाई। इस नीति के अंतर्गत भारत ने समुद्री सुरक्षा, समुद्री संसाधनों के संरक्षण, मानवीय सहायता तथा आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में सहयोग को प्राथमिकता दी। भारत का मानना है कि यदि क्षेत्रीय देश आपसी विश्वास और सहयोग के आधार पर कार्य करें तो हिंद महासागर को शांति और समृद्धि का क्षेत्र बनाया जा सकता है (मेहता, २०२०)।

सागर परियोजना का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह केवल सामरिक संतुलन तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य व्यापक क्षेत्रीय विकास को भी सुनिश्चित करना है। भारत ने इस नीति के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि हिंद महासागर क्षेत्र किसी एक देश के प्रभुत्व का क्षेत्र नहीं बल्कि साझा सहयोग और पारस्परिक हितों का क्षेत्र होना चाहिए। इसी कारण भारत ने इस नीति के अंतर्गत तटीय और द्वीपीय देशों के साथ आर्थिक सहयोग, समुद्री व्यापार और अवसंरचना विकास को भी प्रोत्साहित किया है। भारत द्वारा विभिन्न देशों को तकनीकी सहायता, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण के कार्यक्रम उपलब्ध कराए गए हैं, जिससे क्षेत्रीय देशों की समुद्री सुरक्षा और आर्थिक क्षमता में वृद्धि हुई है (ब्रूस्टर, २०१८)।

सागर परियोजना के विकास में भारत की मानवीय दृष्टि भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। हिंद महासागर क्षेत्र में प्राकृतिक आपदाओं की संभावना अधिक रहती है, जैसे चक्रवात, सुनामी और समुद्री तूफान। इन परिस्थितियों में भारत ने अनेक अवसरों पर मानवीय सहायता और राहत कार्यों के माध्यम से क्षेत्रीय देशों की सहायता की है। इस प्रकार भारत ने यह संदेश दिया है कि वह केवल सामरिक शक्ति के रूप में नहीं बल्कि एक जिम्मेदार और सहयोगी राष्ट्र के रूप में क्षेत्रीय स्थिरता को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। मानवीय सहायता और आपदा राहत कार्य सागर परियोजना के महत्वपूर्ण घटक बन चुके

हैं, जिनके माध्यम से भारत ने क्षेत्रीय देशों के साथ विश्वास और सहयोग को सुदृढ़ किया है (कपलान, २०१०)।

इसके अतिरिक्त सागर परियोजना के अंतर्गत भारत ने समुद्री सुरक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण पहल की है। समुद्री डकैती, अवैध मछली पकड़ना, मानव तस्करी और समुद्री आतंकवाद जैसी चुनौतियाँ हिंद महासागर क्षेत्र में गंभीर चिंता का विषय रही हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए भारत ने विभिन्न देशों के साथ संयुक्त समुद्री अभ्यास, सूचना साझा करने की व्यवस्था तथा तटरक्षक सहयोग को बढ़ावा दिया है। भारत द्वारा कई द्वीपीय देशों को तटरक्षक जहाज, निगरानी प्रणाली और प्रशिक्षण सुविधाएँ प्रदान की गई हैं। इससे न केवल इन देशों की समुद्री सुरक्षा क्षमता में वृद्धि हुई है, बल्कि भारत के साथ उनके संबंध भी अधिक मजबूत हुए हैं। इस प्रकार सागर परियोजना क्षेत्रीय सुरक्षा सहयोग का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभरी है (पंत, २०१६)।

सागर परियोजना का विकास हिंद महासागर क्षेत्र में उभरती सामरिक प्रतिस्पर्धा की पृष्ठभूमि में भी देखा जा सकता है। हाल के वर्षों में कई वैश्विक शक्तियों ने इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को मजबूत किया है, जिससे शक्ति संतुलन की स्थिति में परिवर्तन आया है। इस संदर्भ में भारत ने सागर परियोजना के माध्यम से संतुलित और सहयोगात्मक दृ ष्टिकोण अपनाया है। यह नीति किसी देश के विरुद्ध प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा का प्रतीक नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य क्षेत्रीय स्थिरता और सामूहिक हितों की रक्षा करना है। हालांकि कई विश्लेषक यह मानते हैं कि यह पहल अप्रत्यक्ष रूप से क्षेत्र में बढ़ते बाहरी प्रभावों को संतुलित करने का प्रयास भी है (ब्रूस्टर, २०१८)।

समग्र रूप से देखा जाए तो सागर परियोजना भारत की समुद्री कूटनीति का एक व्यापक और दूरदर्शी दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह पहल केवल सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें आर्थिक सहयोग, मानवीय सहायता, पर्यावरण संरक्षण और क्षेत्रीय विकास को भी समान महत्व दिया गया है। इस नीति के माध्यम से भारत ने यह संदेश दिया है कि हिंद महासागर क्षेत्र की स्थिरता और समृद्धि तभी संभव है जब सभी देश सहयोग और साझेदारी की भावना से कार्य करें। सागर परियोजना के माध्यम से भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ विश्वास और सहयोग को मजबूत किया है तथा क्षेत्रीय स्थिरता में

सकारात्मक योगदान देने का प्रयास किया है। इस प्रकार सागर परियोजना न केवल भारत की समुद्री रणनीति का महत्वपूर्ण भाग है बल्कि हिंद महासागर क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल भी है।

हिंद महासागर में चीन की बढ़ती उपस्थिति

हिंद महासागर क्षेत्र वर्तमान समय में वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और सामरिक प्रतिस्पर्धा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। यह क्षेत्र विश्व के प्रमुख समुद्री व्यापारिक मार्गों का संगम है, जिसके माध्यम से ऊर्जा संसाधनों, कच्चे माल और विभिन्न प्रकार के व्यापारिक वस्तुओं का परिवहन होता है। इसी कारण से अनेक वैश्विक शक्तियाँ इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने का प्रयास कर रही हैं। पिछले दो दशकों में चीन ने हिंद महासागर क्षेत्र में अपने प्रभाव का उल्लेखनीय विस्तार किया है। चीन की इस बढ़ती सक्रियता का मुख्य उद्देश्य अपने ऊर्जा आपूर्ति मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित करना, समुद्री व्यापारिक हितों की रक्षा करना तथा वैश्विक शक्ति संतुलन में अपनी स्थिति को सुदृढ़ करना है। इस दिशा में चीन ने विभिन्न देशों में बंदरगाहों, औद्योगिक क्षेत्रों और समुद्री अवसंरचना के विकास में व्यापक निवेश किया है, जिससे उसकी सामरिक उपस्थिति धीरे–धीरे सुदृढ़ होती जा रही है (ब्रूस्टर, २०१८)।

चीन की समुद्री नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि वह आर्थिक निवेश और अवसंरचनात्मक विकास के माध्यम से विभिन्न देशों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करता है। हिंद महासागर के तटीय देशों में चीन द्वारा किए गए निवेश केवल व्यापारिक दृष्टि से ही महत्वपूर्ण नहीं हैं, बल्कि उनके माध्यम से वह दीर्घकालिक सामरिक प्रभाव भी स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। कई विश्लेषकों का मत है कि चीन द्वारा विकसित किए जा रहे बंदरगाह और समुद्री अवसंरचना केवल आर्थिक गतिविधियों के लिए नहीं बल्कि भविष्य में सामरिक उपयोग के लिए भी महत्वपूर्ण हो सकते हैं। इस दृष्टि से हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती सक्रियता को वैश्विक शक्ति संतुलन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है (कपलान, २०१०)।

चीन की समुद्री उपस्थिति के विस्तार को समझने के लिए उसके दीर्घकालिक सामरिक दृष्टिकोण को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। चीन की आर्थिक प्रगति ने उसकी ऊर्जा आवश्यकताओं को अत्यधिक बढ़ा दिया है। चीन की अर्थव्यवस्था के संचालन के लिए मध्य–पूर्व और अफ्रीका से आने वाले ऊर्जा संसाधन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन संसाधनों का अधिकांश भाग समुद्री मार्गों के माध्यम से हिंद महासागर से होकर चीन तक पहुँचता है। इसलिए चीन के लिए इन समुद्री मार्गों की सुरक्षा सुनिश्चित करना एक महत्वपूर्ण रणनीतिक आवश्यकता बन गया है। इसी कारण चीन ने हिंद महासागर क्षेत्र में अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रकार की समुद्री परियोजनाओं और अवसंरचनात्मक निवेश को बढ़ावा दिया है (पंत, २०१६)।

हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की सक्रियता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण विभिन्न तटीय देशों में बंदरगाहों का विकास है। श्रीलंका, पाकिस्तान, म्यांमार तथा अफ्रीका के कुछ देशों में चीन द्वारा विकसित बंदरगाहों को कई विश्लेषक उसकी दीर्घकालिक समुद्री रणनीति का हिस्सा मानते हैं। इन बंदरगाहों के माध्यम से चीन को न केवल व्यापारिक गतिविधियों में सुविधा प्राप्त होती है बल्कि समुद्री मार्गों पर उसकी उपस्थिति भी सुदृढ़ होती है। कई विद्वानों का मत है कि इस प्रकार की परियोजनाएँ भविष्य में चीन को हिंद महासागर क्षेत्र में अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाने में सक्षम बना सकती हैं (ब्रूस्टर, २०१८)।

इसके अतिरिक्त चीन ने समुद्री अवसंरचना के विकास के साथ–साथ विभिन्न देशों के साथ आर्थिक सहयोग और निवेश के माध्यम से भी अपने प्रभाव को बढ़ाया है। चीन द्वारा प्रदान किए गए ऋण, विकास परियोजनाएँ और औद्योगिक निवेश कई देशों के लिए आर्थिक विकास के अवसर प्रदान करते हैं। हालांकि कुछ विश्लेषकों का यह भी मानना है कि इन परियोजनाओं के माध्यम से चीन दीर्घकालिक आर्थिक और सामरिक प्रभाव स्थापित करने का प्रयास करता है। इस संदर्भ में हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती उपस्थिति को केवल आर्थिक दृष्टि से नहीं बल्कि सामरिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जाता है (मेनन, २०१७)।

चीन की समुद्री सक्रियता का प्रभाव हिंद महासागर क्षेत्र के शक्ति संतुलन पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। भारत सहित कई क्षेत्रीय देशों ने चीन की बढ़ती उपस्थिति को

अपनी सामरिक सुरक्षा के लिए चुनौती के रूप में देखा है। भारत के लिए हिंद महासागर क्षेत्र विशेष महत्व रखता है क्योंकि उसकी भौगोलिक स्थिति, समुद्री व्यापार और ऊर्जा सुरक्षा इस क्षेत्र से सीधे जुड़ी हुई है। इसलिए भारत ने इस क्षेत्र में अपनी समुद्री क्षमता को सुदृढ़ करने तथा क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ाने के प्रयास किए हैं (मोहन, २०१६)।

हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती सक्रियता ने क्षेत्रीय राजनीति को भी प्रभावित किया है। कई छोटे तटीय और द्वीपीय देशों के लिए चीन का आर्थिक सहयोग विकास के नए अवसर प्रदान करता है। वहीं दूसरी ओर, इस बढ़ते प्रभाव ने क्षेत्रीय शक्ति संतुलन के प्रश्न को भी महत्वपूर्ण बना दिया है। इस स्थिति में विभिन्न देशों के बीच सामरिक सहयोग और संतुलन की आवश्यकता और अधिक बढ़ गई है। कई विद्वानों का मत है कि हिंद महासागर क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने के लिए क्षेत्रीय देशों को आपसी सहयोग और संतुलन की नीति अपनानी होगी (राजा मोहन, २०१२)।

समग्र रूप से देखा जाए तो हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की बढ़ती उपस्थिति वैश्विक राजनीति के व्यापक परिवर्तन का प्रतीक है। यह केवल एक क्षेत्रीय घटना नहीं बल्कि वैश्विक शक्ति संतुलन में हो रहे परिवर्तनों का भी संकेत देती है। चीन की आर्थिक और सामरिक शक्ति के विस्तार के साथ–साथ उसकी समुद्री नीति भी अधिक सक्रिय होती जा रही है। इसके परिणामस्वरूप हिंद महासागर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा और सहयोग दोनों की संभावनाएँ बढ़ी हैं। इस परिस्थिति में यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय देश संतुलित और सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए इस क्षेत्र को स्थिर और सुरक्षित बनाए रखने के लिए सामूहिक प्रयास करें।

सागर परियोजना और क्षेत्रीय शक्ति संतुलन

हिंद महासागर क्षेत्र वर्तमान समय में वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और सामरिक प्रतिस्पर्धा का एक अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। यह क्षेत्र विश्व के प्रमुख समुद्री व्यापारिक मार्गों का संगम है और ऊर्जा संसाधनों की आपूर्ति, अंतरराष्ट्रीय व्यापार तथा सामरिक प्रभुत्व की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। इसी कारण से अनेक वैश्विक शक्तियाँ इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने का प्रयास कर रही हैं। इस बदलते

सामरिक परिदृश्य में भारत ने क्षेत्रीय स्थिरता और संतुलन बनाए रखने के उद्देश्य से "सागर परियोजना" की अवधारणा प्रस्तुत की। सागर परियोजना को हिंद महासागर क्षेत्र में शक्ति संतुलन स्थापित करने की दिशा में भारत की एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में देखा जाता है। इस नीति के माध्यम से भारत ने यह स्पष्ट किया है कि वह क्षेत्रीय स्थिरता, सहयोग और साझा विकास को प्राथमिकता देता है तथा हिंद महासागर क्षेत्र को प्रतिस्पर्धा के बजाय सहयोग और साझेदारी का क्षेत्र बनाना चाहता है (पंत, २०१६)।

सागर परियोजना का मूल उद्देश्य हिंद महासागर क्षेत्र में सभी देशों के लिए सुरक्षा और विकास सुनिश्चित करना है। इस नीति के अंतर्गत भारत ने यह दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है कि समुद्री सुरक्षा, आर्थिक समृद्धि और पर्यावरण संरक्षण जैसे मुद्दों पर क्षेत्रीय देशों को मिलकर कार्य करना चाहिए। भारत का मानना है कि यदि हिंद महासागर क्षेत्र के तटीय और द्वीपीय देश आपसी सहयोग और विश्वास के आधार पर कार्य करें तो इस क्षेत्र में स्थिरता और संतुलन बनाए रखा जा सकता है। इस दृष्टिकोण के माध्यम से भारत ने यह भी स्पष्ट किया है कि वह इस क्षेत्र में किसी प्रकार के प्रभुत्व की नीति का समर्थन नहीं करता बल्कि सभी देशों की समान भागीदारी और साझा हितों को महत्व देता है (मेहता, २०२०)।

सागर परियोजना के अंतर्गत भारत ने क्षेत्रीय देशों के साथ सामरिक सहयोग को भी बढ़ावा दिया है। हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री डकैती, अवैध व्यापार, मानव तस्करी तथा समुद्री आतंकवाद जैसी चुनौतियाँ लगातार सामने आती रही हैं। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए भारत ने विभिन्न देशों के साथ समुद्री सुरक्षा सहयोग को मजबूत किया है। संयुक्त समुद्री अभ्यास, सूचना आदान–प्रदान तथा तटरक्षक सहयोग के माध्यम से क्षेत्रीय देशों की सुरक्षा क्षमता को बढ़ाने का प्रयास किया गया है। इससे न केवल क्षेत्रीय सुरक्षा व्यवस्था मजबूत हुई है बल्कि विभिन्न देशों के बीच विश्वास और सहयोग की भावना भी विकसित हुई है (ब्रूस्टर, २०१८)।

इसके अतिरिक्त सागर परियोजना के अंतर्गत भारत ने आर्थिक सहयोग और विकास को भी विशेष महत्व दिया है। हिंद महासागर क्षेत्र के कई देश विकासशील अर्थव्यवस्थाएँ हैं और उन्हें अवसंरचनात्मक विकास, व्यापारिक विस्तार तथा तकनीकी सहयोग की आवश्यकता

है। भारत ने इन देशों के साथ व्यापार, निवेश और विकास परियोजनाओं के माध्यम से सहयोग को बढ़ावा दिया है। इससे क्षेत्रीय आर्थिक विकास को गति मिली है और विभिन्न देशों के बीच पारस्परिक निर्भरता भी बढ़ी है। आर्थिक सहयोग के माध्यम से क्षेत्रीय स्थिरता को मजबूत करने का यह प्रयास सागर परियोजना की एक महत्वपूर्ण विशेषता है (मोहन, २०१६)।

सागर परियोजना का एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि यह क्षेत्रीय देशों के साथ विश्वास और साझेदारी के संबंधों को मजबूत करने का प्रयास करती है। भारत ने इस नीति के माध्यम से यह संदेश दिया है कि हिंद महासागर क्षेत्र की सुरक्षा और विकास सभी देशों की साझा जिम्मेदारी है। भारत ने कई द्वीपीय देशों को समुद्री निगरानी प्रणाली, तटरक्षक जहाज तथा प्रशिक्षण सुविधाएँ प्रदान की हैं। इसके अतिरिक्त भारत ने प्राकृतिक आपदाओं के समय मानवीय सहायता और राहत कार्यों के माध्यम से भी क्षेत्रीय देशों की सहायता की है। इन प्रयासों के माध्यम से भारत ने स्वयं को एक जिम्मेदार और सहयोगी राष्ट्र के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है (सिंह, २०२०)।

सागर परियोजना को क्षेत्रीय शक्ति संतुलन की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जाता है। हिंद महासागर क्षेत्र में हाल के वर्षों में विभिन्न वैश्विक शक्तियों की सक्रियता बढ़ी है, जिसके कारण क्षेत्रीय राजनीति और सुरक्षा व्यवस्था में परिवर्तन देखने को मिला है। इस परिस्थिति में भारत ने सागर परियोजना के माध्यम से संतुलित और सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाया है। यह नीति किसी देश के विरुद्ध प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा का प्रतीक नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य क्षेत्रीय स्थिरता और संतुलन को बनाए रखना है। कई विद्वानों का मत है कि इस प्रकार की सहयोगात्मक पहलें क्षेत्रीय देशों को बाहरी प्रभावों से संतुलन स्थापित करने में सहायता प्रदान कर सकती हैं (राजा मोहन, २०१२)।

इसके साथ ही सागर परियोजना समुद्री संसाधनों के संरक्षण और पर्यावरणीय संतुलन को भी महत्व देती है। हिंद महासागर क्षेत्र में मत्स्य संसाधन, समुद्री जैव विविधता और खनिज संपदा अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन संसाधनों के संरक्षण और सतत उपयोग के लिए क्षेत्रीय देशों के बीच सहयोग आवश्यक है। भारत ने सागर परियोजना के माध्यम से समुद्री पर्यावरण संरक्षण, वैज्ञानिक अनुसंधान तथा सतत विकास के क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा

दिया है। इससे न केवल समुद्री संसाधनों के संरक्षण में सहायता मिलती है बल्कि क्षेत्रीय विकास की संभावनाएँ भी बढ़ती हैं (कुमार, २०१७)।

समग्र रूप से देखा जाए तो सागर परियोजना हिंद महासागर क्षेत्र में शक्ति संतुलन बनाए रखने की दिशा में भारत की एक महत्वपूर्ण और दूरदर्शी पहल है। यह नीति केवल सामरिक प्रतिस्पर्धा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें आर्थिक सहयोग, मानवीय सहायता, पर्यावरण संरक्षण और क्षेत्रीय साझेदारी को भी समान महत्व दिया गया है। भारत ने इस पहल के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि हिंद महासागर क्षेत्र की स्थिरता और समृद्धि तभी संभव है जब सभी देश सहयोग और पारस्परिक सम्मान की भावना से कार्य करें। इस प्रकार सागर परियोजना हिंद महासागर क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और संतुलन को बनाए रखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

निष्कर्ष

अंततः यह कहा जा सकता है कि हिंद महासागर क्षेत्र वर्तमान वैश्विक राजनीति में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है। चीन की बढ़ती गतिविधियों ने इस क्षेत्र में शक्ति संतुलन के प्रश्न को और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। ऐसे परिदृश्य में सागर परियोजना भारत की एक दूरदर्शी नीति के रूप में उभरकर सामने आती है। यह नीति केवल सामरिक प्रतिस्पर्धा तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सहयोग, विकास और मानवीय मूल्यों को भी समान महत्व दिया गया है। यदि भारत इस नीति को प्रभावी ढंग से लागू करता है और क्षेत्रीय देशों के साथ सहयोग को मजबूत करता है, तो यह हिंद महासागर क्षेत्र में स्थिरता और संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ सूची

1. ब्रूस्टर, डी. (२०१८) हिंद महासागर में सामरिक प्रतिस्पर्धा. नई दिल्लीरू ऑक्सफोर्ड प्रकाशन।

2. कपलान, आर. (२०१०) मॉनसूनरू हिंद महासागर और वैश्विक राजनीति. नई दिल्लीरू पेंगुइन प्रकाशन।
3. पंत, एच. (२०१६) भारत की समुद्री सुरक्षा और रणनीति. नई दिल्लीरू सेज प्रकाशन।
4. मेहता, आर. (२०२०) 'हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की समुद्री नीति', अंतरराष्ट्रीय अध्ययन पत्रिका, १२(२), पृ. ४५दृ६२।
5. मेनन, आर. (२०१७) एशिया में शक्ति संतुलन और समुद्री राजनीति. नई दिल्लीरू विश्वविद्यालय प्रकाशन।
6. मोहन, सी. (२०१६) समुद्री एशिया की राजनीति. नई दिल्लीरू हार्पर कॉलिन्स प्रकाशन।
7. राजा मोहन, सी. (२०१२) समुद्री भारत और एशियाई राजनीति. नई दिल्लीरू पेंगुइन प्रकाशन।
8. सिंह, ए. (२०२०) समुद्री सुरक्षा और वैश्विक राजनीति. नई दिल्लीरू सेज प्रकाशन।
9. कुमार, एस. (२०१७) एशियाई शक्ति संतुलन और समुद्री रणनीति. नई दिल्लीरू विश्वविद्यालय प्रकाशन।
10. शर्मा, आर. (२०१८) 'हिंद महासागर क्षेत्र में उभरती सामरिक चुनौतियाँ', अंतरराष्ट्रीय संबंध समीक्षा, १४(२), पृ. ४१दृ५८।
11. मिश्रा, पी. (२०१६) 'हिंद महासागर क्षेत्र में चीन की रणनीति', राजनीतिक अध्ययन पत्रिका, १०(१), पृ. ६५दृ८२।
12. दत्त, आर. (२०१८) 'समुद्री मार्ग और वैश्विक व्यापार', अंतरराष्ट्रीय संबंध पत्रिका, ६(३), पृ. ५२दृ६६।
13. चौधरी, एम. (२०२१) हिंद महासागर की सामरिक राजनीति. जयपुररू राजस्थान अध्ययन केंद्र।